अमृत प्रार्थना

(परम पूज्य बाबा जी के ग्रंथ मेरा लक्ष्य से)

करूँ प्रार्थना प्राणनाथ से राग द्वेष हरने की।
चंचल मति शान्त हो समता मिले ध्यान धरने की ॥
कृपा तुम्हारी रहे निरन्तर दास खास अपने पर।
अनुपम हो आनन्द तुम्हारा मधुर नाम जपने पर।।
श्वास का धागा नाम की मणियाँ मन में रहत सुमिरणी।
दसों इन्द्रियाँ पुष्प रुप सब करूँ समर्पित चरणी ।।
प्राणि-पदार्थ दृश्य जगत के सभी तुम्हारी पाती।
नाम-रुप अरु वर्ण विभाजन बनी अनेकों जाती ॥
जो कुछ क्रिया होती हो तन से करूँ तुम्हारे अर्पण।
पत्र पुष्प फल जल आदिक से करूँ तुम्हारा तर्पण ।।
प्रार्थना करने का मतलब है हृदय विनम्र बनाना।
जैसे कठिन भूमि के सिर पर हल को पड़े चलाना ॥
हल के द्वारा भूमि नरम कर उसमें फसल बुआती।
फिर भी घास पात जम जाते करनी पड़े सोहाती ॥
तैसेइ जमती हृदय भूमि पर काम क्रोध की झाड़ी।
ज्ञान रुप अनुपम हल द्वारा फेंको भक्त उखाड़ी॥
'शिवानन्द' के हृदय क्षेत्र में घास जमी थी भारी।
स्वयं बनिहार बने श्रीकृष्ण जी जड़ से खोद उखारी॥
सुन्दर सोहनी हो जाने पर फसल श्रेष्ठ लगती है।
तैसेइ राग-द्वेष मिटने पर शुद्ध भक्ति जगती है।।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति